भोपाल रियासत: बेरसिया के सिसोदिया राजपूत परिवार (हिंदी निगार साहब) का ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक दस्तावेज़ (Dossier)

१. पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं वंश-क्रम (Family Lineage)

आपका परिवार भोपाल रियासत के परगना बेरसिया का एक अत्यंत प्रभावशाली, अभिजात और प्रशासनिक रूप से स्थापित कुल रहा है। पारिवारिक परंपरा एवं जागाजी/बड़वाजी (किशनगढ़ वाले प्रेम सिंह सिसोदिया जी) से प्राप्त वंशावली संदर्भों के अनुसार, इस परिवार के मूल पूर्वज मेवाड़ में महाराणा प्रताप के वंशज थे, जो कालंतर में गागरोन आए। इसके बाद आपके परिवार का मूल स्थान और भोपाल आगमन के ऐतिहासिक संदर्भ सहित आधिकारिक वंशावली का क्रम इस प्रकार है:

1. कमल सिंह **(Kamal Singh)** – मूलतः मेवाड़/गागरोन परंपरा से संबंध; कमालपुर, शुजालपुर (Shujalpur) निवासी।
2. श्याम सिंह **(Shyam Singh)**
3. जगन्नाथ सिंह प्रथम **(Jagannath Singh I)** – जिन्हें भोपाल नवाब द्वारा प्रशासनिक/राजस्व उत्तरदायित्वों हेतु कमालपुर/शुजालपुर से बेरसिया लाया गया और स्थापित किया गया।
4. बुद्ध सिंह **(Budh Singh)**
5. ठाकुर उमराव सिंह **(Thakur Umrao Singh)** – बेरसिया के प्रमुख दीवान, इंटेलिजेंस प्रभारी, हिस्सेदार एवं इस्तिमरार मुहर्रिर (Istimrar Muharrir)।
6. जगन्नाथ प्रसाद / जगन्नाथ सिंह द्वितीय **(Jagannath Prasad / Jagannath Singh II)** – परगना बेरसिया के मुख्य हिन्दी निगार, दीवान एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी।
7. गजाधर सिंह **(Gajadhar Singh)** – पेशकार, फूड इंस्पेक्टर भोपाल, नायब तहसीलदार एवं साहित्यिक व्यक्तित्व।

गजाधर सिंह जी के ४ पुत्र एवं उनके वंशज (Descendants of Gajadhar Singh)

मोहन सिंह **(Mohan Singh):** तहसील कार्यालय में कार्यरत रहे।

- पुत्र: दीपक सिंह (Deepak Singh)

ओम प्रकाश सिंह **(Om Prakash Singh):** प्रथम सेवा कोऑपरेटिव सोसाइटी (Cooperative Society) तत्पश्चात सिंचाई विभाग (Irrigation Department) में कार्यरत रहे।

- पुत्र: अनिल सिंह (Anil Singh), अमित सिंह (Amit Singh), तथा अतुल सिंह (Atul Singh)

राजेन्द्र सिंह **(Rajendra Singh):** मंडी इंस्पेक्टर (Mandi Inspector) के पद पर कार्यरत रहे।

- पुत्र: किशोर सिंह (Kishore Singh) तथा जितेन्द्र सिंह (Jitendra Singh)

जय प्रकाश सिंह **(Jay Prakash Singh):** तहसील कार्यालय में कार्यरत रहे।

- पुत्र: पंकज सिंह (Pankaj Singh) तथा सौरभ सिंह (Sourabh Singh)

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

२. प्रशासनिक एवं सैन्य पद: दीवान, मुंसिफ, हिन्दी निगार, जागीरदार व फ़ौज कमान व्यवस्था

परगना बेरसिया में इस परिवार के पास "दीवान", "इंटेलिजेंस प्रभारी (Informer/Mukhbir)", "हिन्दी निगार" तथा "हिस्सेदार - इस्तिमरार मुहर्रिर", जागीरदार व फ़ौज कमान व्यवस्था के अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट आधिकारिक पद रहे:

- ऐतिहासिक बेरसिया आगमन: जागाजी/बड़वाजी (किशनगढ़) की वंशावली परंपरा के अनुसार परिवार का संबंध मेवाड़ व गागरोन की परंपरा से रहा, जहाँ से कमल सिंह जी कमालपुर (शुजालपुर) में स्थापित हुए। तत्पश्चात भोपाल के नवाब द्वारा जगन्नाथ सिंह प्रथम जी को उनके प्रशासनिक कौशल और नेतृत्व के कारण कमालपुर से लाकर बेरसिया परगना में स्थापित किया गया, जहाँ से इस परिवार का रियासती प्रशासन में नेतृत्व आरंभ हुआ।

- १८६१ का बेरसिया हस्तांतरण एवं हकदारी: जब १८६१ ई० (1861 AD) में अंग्रेजों द्वारा बेरसिया परगना भोपाल रियासत को सौंपा गया, तब परगना के प्रमुख हकदारों की सूची में ठाकुर उमराव सिंह जी का नाम आधिकारिक रूप से "हिussेदार" तथा "इस्तिमरार मुहर्रिर" (Istimrar Muharrir) के रूप में दर्ज किया गया।

- बेरसिया की मुंसिफ कचहरी एवं तहसील का संचालन **(Gazetteer & Oral History Correlation):**
    - गज़ेटियर संदर्भ **(C.E. Luard Gazetteer Reference):** कैप्टन सी.ई. लुआर्ड (C.E. Luard) द्वारा संकलित 'भोपाल स्टेट गज़ेटियर' (Central India State Gazetteer Series) के आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार, बेरसिया परगना का मुख्य प्रशासनिक व न्यायिक केंद्र बेरसिया कस्बा था, जहाँ तहसील तथा 'मुंसिफ कचहरी' (Civil/Diwani Court) स्थापित थी।
    - पारिवारिक इतिहास: मौखिक परंपरा एवं वरिष्ठ सदस्यों की स्मृतियों के अनुसार, स्वतंत्रता-पूर्व इस मुंसिफ कचहरी एवं तहसील कार्यालय का संचालन आपके पैतृक निवास (घर) से ही किया जाता था।

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

'हिंदी निगार' पद का प्रशासनिक स्वरूप, उत्तरदायित्व एवं क्षेत्राधिकार (1857 म्यूटिनी पेपर्स साक्ष्य आधारित): 18वीं और 19वीं शताब्दी में भोपाल रियासत तथा ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंसी के दौर में 'हिंदी निगार' **(Chief Vernacular Officer & Registrar)** केवल एक सामान्य कर्मचारी नहीं, बल्कि राज्य एवं एजेंसी स्तर का एक प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी होता था (जिसका प्रामाणिक संदर्भ 1857 के म्यूटिनी पेपर्स में होशंगाबाद व सीहोर के हिंदी निगार के रूप में भी दर्ज मिलता है)।

- हिन्दी निगार की भूमिका: 18वीं-19वीं शताब्दी में भोपाल रियासत का मुख्य दफ़्तरी काम उर्दू/फ़ारसी में होता था। देवनागरी/हिंदी भाषा में आने वाले सभी राजस्व अभिलेख (revenue records), ज़मीन के बैनामे (sale deeds), परवाने और कानूनी आवेदनों (legal petitions) को प्रमाणित (certify), अनुमोदित (approve) और सत्यापित (verify) करने का क्षेत्राधिकार केंद्रीय 'हिंदी निगार' (Chief Vernacular Officer & Registrar) के पास ही होता था। परगने के अलग-अलग कानूनगो द्वारा तैयार किए गए रिकॉर्ड्स का अंतिम सत्यापन और शाही प्रमाणीकरण 'हिंदी निगार' के प्राधिकरण से ही जारी होता था। रियासत, पॉलिटिकल एजेंसी तथा सैन्य टुकड़ियों (contingents) के हिंदी/देवनागरी दस्तावेजों को नियंत्रित करने और उनकी प्रमाणित प्रतियाँ (nakal) जारी करने का कानूनी अधिकार इन्हीं के पास था।

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

II. बेरसिया हस्तांतरण एवं हकदार रिकॉर्ड (१८६१ ई० / 1861 AD)

- विवरण: सन् १८६१ ई० (1861 AD) में अंग्रेजों द्वारा बेरसिया परगना भोपाल रियासत को सौंपे जाने के समय तैयार किया गया परगना के प्रमुख हकदारों (Haqdars) एवं राजस्व अधिकारियों का आधिकारिक रिकॉर्ड।
- मुख्य तथ्य: इस दस्तावेज़ की पंक्ति में स्पष्ट रूप से "दा० ठा० उमराव सीध हिस्सेदार, इस्तिमरार मुहर्रिर" अंकित है।
- अर्थ व महत्त्व: यह प्रविष्टि यह सिद्ध करती है कि ठाकुर उमराव सिंह जी बेरसिया में केवल प्रशासनिक अधिकारी ही नहीं थे, बल्कि परगना के राजस्व/ज़मीन अधिकारों में पंजीकृत 'हिस्सेदार' (Co-sharer) थे, और 'इस्तिमरार मुहर्रिर' (Istimrar Muharrir - Permanent/Hereditary Legal Scribe & Registrar) के सर्वोच्च पद पर आसीन थे।

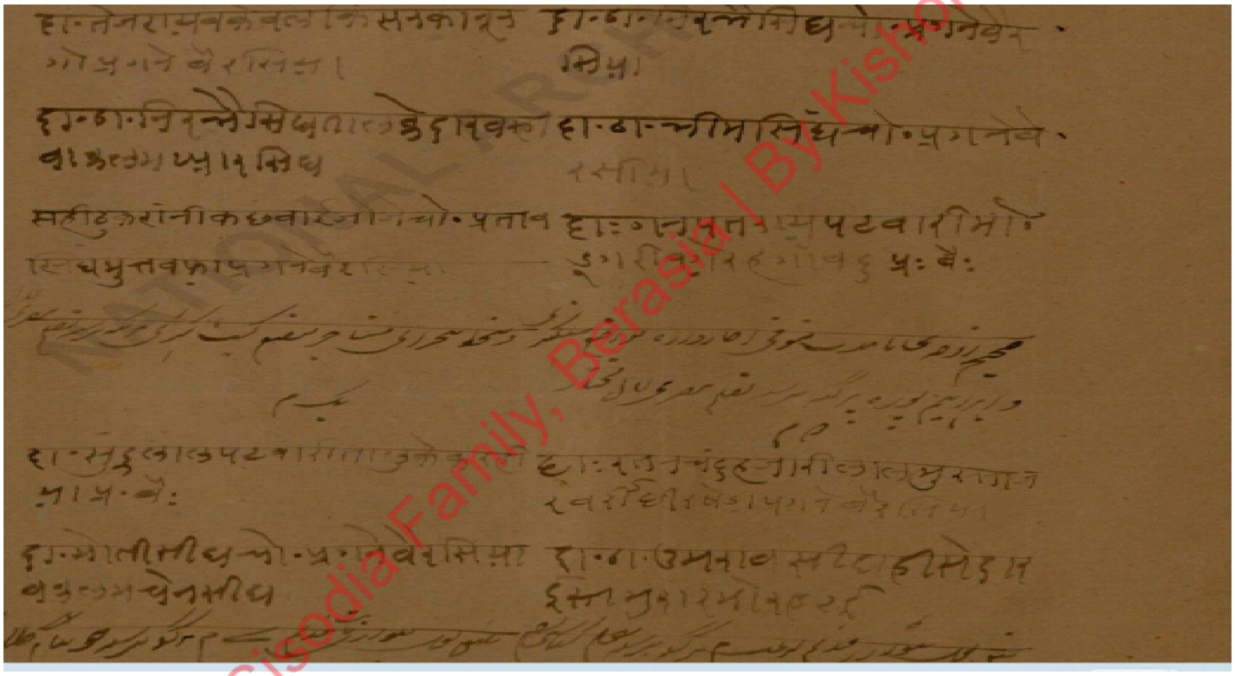

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

III. फ़ारसी ज़मीन विक्रय दस्तावेज़ (२० रजब १३०० हिजरी / 20 Rajab 1300 AH - ~मई १८८३ ई० / May 1883 AD)

- विवरण: क़स्बा बेरसिया में स्थित खण्डहर (बाड़े) को मय उसके मालिकाना अधिकारों के कानूनी क्रय-विक्रय (Sale Deed) का फ़ारसी/उर्दू से अनूदित प्रामाणिक दस्तावेज़।
- तारीख़ एवं मामला: यह दस्तावेज़ तारीख़ २० माह रजब (७वाँ महीना) सन १३०० हिजरी / 20 Rajab 1300 AH (~मई १८८३ ईस्वी / May 1883 AD) का है, जिसमें मकान का सीमांकन (फ़र्द पैमाइश) दर्ज है।
- मुख्य तथ्य:
    - इस दस्तावेज़ में क्रेता के रूप में ठाकुर उमराव सिंह वल्द ठाकुर बुद्ध सिंह, कौम राजपूत, मोहर्रिर (Muharrir / Legal Scribe & Administrator), निवासी ग्राम बैरसिया का नाम स्पष्ट दर्ज है।
    - यह मकान/बाड़ा कुल १० रुपये / ₹10 के बाऐवज (बदले) में उनके पूर्ण स्वामित्व और आधिपत्य अधिकारों के साथ क्रय किया गया था।

(मौहर)
विक्रय पत्र खण्डहर (बाड़ा)
कीमत रूपये 10-00

अनुबंध सही व सत्य किया श्रीमती जमना पत्नी जबाहर सिंह स्वयं कौम अहीर निवासी ग्राम बैरसिया जिला शुमाल (दक्षिण) रियासत भोपाल ने स्वस्थ दशा अपने सही होश हवास विक्रय पत्र (दस्तावेज) एक किता मकान गली सफाला पोश (साफ सुथरा) एक मंजिला स्थित कस्बा (ग्राम) बैरसिया मकान के पीछे खण्डहर बाड़ा जानिब मगरिब (पश्चिम) और उसकी चौहदी (सीमा) मकान से लगा हुआ विक्रेता का मकान और रास्ता आम शुमाल (उत्तर) जुनूब (दक्षिण) में मकान उमरावसिंह और

ठाकुर उमराव सिंह वल्द ठाकुर बुद्ध सिंह कौम राजपूत मोहर्रिर निवासी ग्राम बैरसिया को मेरे समान स्वामित्व, आधिपत्य के अधिकारों के साथ विक्रय कर दिया यह विक्रय पत्र कानूनी तौर पर वैध कब्जा भी मालकाना दे दिया है। मुझ विक्रेता ने रकम विक्रय की अपने प्रयोग में ले ली है और मकान खण्डहर क्रेता के कब्जे में दे दिया अब हम

मुकाम कोई भी दावा पेश करे तो वह असत्य अवैध होगा इसलिये यह विक्रय पत्र अदालत दीवानी बैरसिया लिखवा दिया के प्रमाण हो और वक्त जरूरत काम आवे, फक्त तारीख 9 रजब 1300 हिजरी मुताबिक 1290 फसली मिति जेष्ठ 1 सन 1940 विक्रमाजीत दिन गुरूवार बकलम मोहम्मद अकील उद्दीन निवासी बैरसिया।

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

IV. गिरवी-नामा एवं संपत्ति हस्तांतरण दस्तावेज़ (जेठ बदी १३, संवत् १९४६ / १२९६ फसली / जून १८८९ ई० - 1889 AD)

विवरण: जेठ बदी १३, संवत् १९४६ / १२९६ फसली (संवत् 1946 / 1296 फसली / 1889 ईस्वी) को तैयार किया गया स्थानीय गिरवी-नामा एवं राजस्व समझौता दस्तावेज़ (Mortgage / Pledge Deed)।

पक्षकार **(Mortgagors):** दौलतराम एवं रामचंद्र द्वारा ज़मीन/संपत्ति गिरवी रखे जाने का उल्लेख।

मुख्य तथ्य एवं प्रशासनिक साक्ष्य:

- इस दस्तावेज़ में आपके पूर्वजों का नाम आधिकारिक रूप से " दीवान जी उमरावसिंह वा जगंनाथ प्रसाद हिन्दी निगार को..." के रूप में दर्ज है।
- सम्मानजनक पदवी: यह दस्तावेज़ स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि स्थानीय राजस्व व कानूनी रिकॉर्ड में ठाकुर उमराव सिंह जी को **"दीवान जी" (Diwanji)** तथा जगन्नाथ प्रसाद जी को **"हिन्दी निगार" (Hindi Nigaar)** की आधिकारिक उपाधि से संबोधित किया जाता था।
- यह साक्ष्य बेरसिया में दीवान परिवार के प्रशासनिक नियंत्रण, ज़मीन गिरवी रखने की कानूनी व्यवस्था और न्यायिक अधिकार क्षेत्र की पुष्टि करता है।

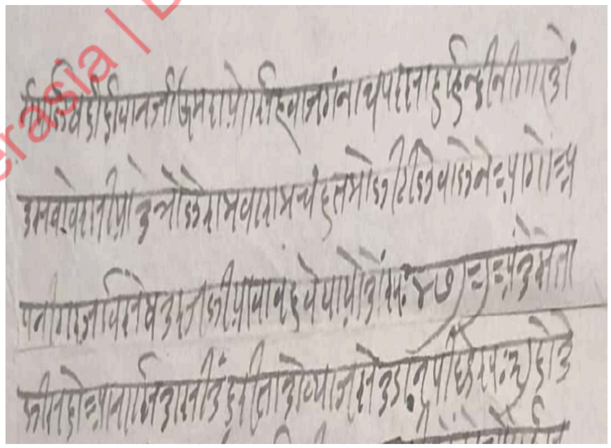

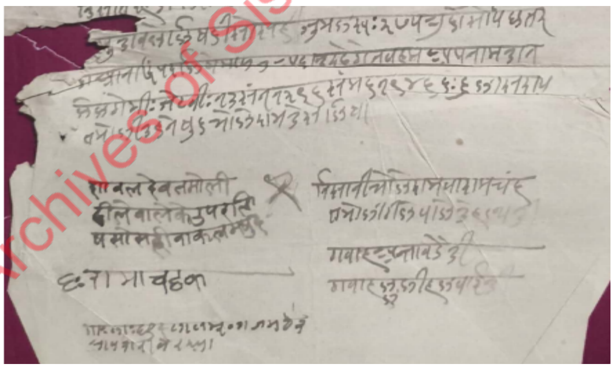

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

V. नेशनल आर्काइव्स सनद-जागीर रिकॉर्ड (फाइल नं० २३४/१ / File No. 234/1)

- **विवरण:** नेशनल आर्काइव्स ऑफ इंडिया (क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल) के भोपाल स्टेट पब्लिक रिकॉर्ड्स की "सनद-जागीर" इंडेक्स सूची।
- **मुख्य तथ्य:** इस रिकॉर्ड के वॉल्यूम २६ / Volume 26 (पेज ३७२ / Page 372, फाइल नं० २३४/१ / File No. 234/1) पर जगन्नाथ सिंह (पुत्र उमराव सिंह) का नाम दर्ज है, जो यह प्रमाणित करता है कि परिवार के पास भोपाल रियासत द्वारा दी गई आधिकारिक जागीरदारी सनद मौजूद

National Archives of India, Regional Office, Bhopal
Bhopal State Public Records
SANAD-JAGIR

231/3	Jahan Ara Gurjan wife of Mian Umrao Muhammad Khan		25	366
231/4	Jahan Ara Gurjan wife of Mian Umrao Muhammad Khan		25	367
232/1	Chhatra Sal alias Satru Sal Thakur		25	368
232/1	Chhatra Sal alias Satru Sal Thakur		25	369
232/2	Chain Singh son of Thakur Chhatra Sal		25	370
233/1	Chandan Singh son of Bhagwant Singh Rajput		26	371
234/1	Jagannath Singh son of Umrao Singh		26	372
235/1	Chandu Lal son of Raja Khushwaqt Rai		26	373
236/1	Chhatra Sal son of Chaudhary		26	374

Archives of Sisodia Family, Berasia! By Kishore Singh Rajput

VI. ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंसी प्रशंसा-पत्र (१२ दिसंबर १९१४ / 12 December 1914)

- विवरण: कैम्प हर्राखेड़ा से १२ दिसंबर १९१४ (12 December 1914) को जारी किया गया आधिकारिक प्रशस्ति-पत्र (Recommendation Letter)।
- मुख्य तथ्य: इस दस्तावेज़ पर भोपाल एजेंसी के सर्वोच्च ब्रिटिश अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल डब्ल्यू. एस. डेविस (Lt. Col. W. S. Davis - Political Agent in Bhopal) के हस्ताक्षर हैं। उन्होंने जगन्नाथ प्रसाद जी (हिन्दी निगार / दीवान) की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उन्होंने सरखंडी और बेरसिया में पॉलिटिकल एजेंसी के दौरे के दौरान कैम्प की सभी प्रशासनिक व वी VIP व्यवस्थाओं को संभालने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी।

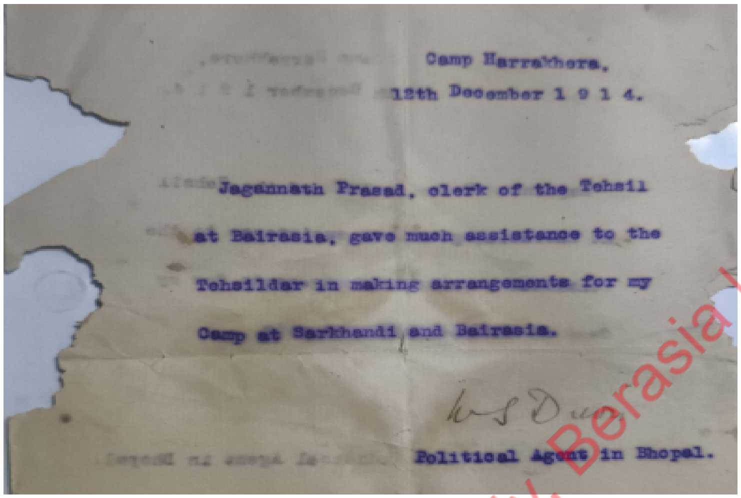

Camp Harrakhera,
12th December 1 9 1 4.

Jagannath Prasad, clerk of the Tehsil at Bairasia, gave much assistance to the Tehsildar in making arrangements for my Camp at Sarkhandi and Bairasia.

Political Agent in Bhopal.

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput

VII. शैक्षणिक एवं साहित्यिक योग्यता प्रमाण-पत्र (नवंबर १९५१ / November 1951)

- विवरण: भारतीय विद्वत्परिषद, अजमेर द्वारा १५ नवंबर १९५१ (15 November 1951) को जारी 'हिन्दी साहित्य विशारद' डिग्री प्रमाण-पत्र।
- मुख्य तथ्य: इस प्रमाण-पत्र के अनुसार, गजाधर सिंह जी (पुत्र जगन्नाथ प्रसाद जी) ने सीहोर मंडलान्तर्गत बेरसिया में रहकर इस प्रतिष्ठित साहित्यिक परीक्षा को उत्तीर्ण किया, जो उस दौर में स्नातक (B.A.) के समतुल्य मानी जाती थी।

VIII. प्रशासनिक प्रगति एवं *'कुरक अमीन'* व अंतिम *'हिंदी निगार'* की भूमिका *(Administrative Career of Gajadhar Singh Ji)*

- विवरण*:* परिवार की समृद्ध प्रशासनिक व साहित्यिक परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गजाधर सिंह जी स्वतंत्रता-पूर्व भोपाल रियासत के परगना बेरसिया के अंतिम *'हिंदी निगार साहब'* के रूप में सेवाएँ देने वाले प्रशासनिक अधिकारी रहे।
- नज़ीराबाद में *'कुरक अमीन'* एवं पेशकार का दायित्व*:* नज़ीराबाद में पदस्थापना के दौरान वे पेशकार होने के साथ-साथ *'कुरक अमीन' **(Qurq Amin / Attachment & Court Execution Officer)*** का महत्वपूर्ण प्रशासनिक व न्यायिक प्रभार भी संभालते थे।
    - *'कुरक अमीन'* का प्रशासनिक अर्थ व हैसियत*:* रियासती व्यवस्था में *'कुरक'* का अर्थ होता है कुर्की/जब्ती *(Court Attachment)* और *'अमीन'* का अर्थ होता है अदालती/राजस्व अधिकारी। यह केवल क्लर्क का काम नहीं था, बल्कि अदालत या रियासत के आदेशानुसार बकाएदारों या विवादित मामलों में संपत्ति/राजस्व की आधिकारिक कुर्की *(Attachment of Property)* और वसूली का निष्पादन *(Court Decree Execution)* करने वाला सर्वोच्च अधिकृत अधिकारी होता था।
- आगे का प्रशासनिक सफर*:* उन्होंने पेशकार और कुरक अमीन के रूप में अपनी कुशल कार्यप्रणाली के बाद भोपाल में फूड इंस्पेक्टर के पद पर पदोन्नति प्राप्त की, और आगे चलकर उन्होंने नायब तहसीलदार के प्रतिष्ठित राजस्व पद को विभूषित किया।

Archives of Sisodia Family, Berasia | By Kishore Singh Rajput